दूजीवार

सं० २००४ वि०

मूल्य ।||)

मुद्रक

राजपूत प्रेस लिमिटेड

जयपुर

दो शब्द

उमड़ती हुई काली घटा किसे मस्त नहीं बना देती ? किन्तु मारवाड़ तथा जांगळ देश में, जहां प्रति तीसरे वर्ष अकाल पड़ना एक साधारण बात है, स्वल्प-वृष्टि जहाँ एक नियम है और अति-वृष्टि जहाँ एक अनहोनी घटना है, वर्षा और साथ ही 'बादळी' का वहाँ के देशवासियों के जीवन में एक विशेष स्थान है। यही कारण है कि राजस्थानी साहित्य में वर्षा और मेघों को लेकर की गई रचनाएँ बहुतायत से मिलती हैं। और इस पुस्तक में भी तद्देशीय सर्वसाधारण के हृदय में उठने वाली उसी भावना को सुन्दर काव्य द्वारा व्यक्त करने का कवि ने सफल प्रयत्न किया है।

कवि ने राजस्थानी मिश्रित डिंगल भाषा में 'बादळी' की प्रतीक्षा, उसके आगम और उसके

निरन्तर बदलने वाले स्वरूप का हृदयग्राही वर्णन किया है। वर्षा ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य को लेकर कवि ने सुन्दर शब्द-चित्र उपस्थित किए हैं। कई एक स्थलों पर अच्छी सूक्तियां बन पड़ी हैं। कवि की यह प्रारम्भिक रचना है एवं उसमें यत्र-तत्र पुराने गीतों और दोहों के भावों का समावेश हो जाना स्वाभाविक ही है। राजस्थान में मेघों को लेकर कई एक कहावतें प्रचलित हैं, कवि ने उनको भी अपने काव्य में अपनाया है। यद्यपि कहीं कहीं अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है, प्रायः भाषा सीधी-सादी और सुबोधगम्य है।

कवि नवयुवक है; यह होनहार भी जान पड़ता है, एवं आशा करता हूँ कि आगे चलकर यह अपेक्षाकृत उत्तम रचनाओं की रचना करेगा।

रघुबीर निवास
सीतामऊ (मालवा)
बसन्त पंचमी, वि० सं० १९९८

रघुबीरसिंह

अढ़ाई आखर

मोर री 'पिहु' कोयलरी 'कुहु' पपीहै री 'पी पिव', और टीटोड़ी री 'टी टिव' आप रै रूप में पूरी रट है। अै आप आनरी विशेपता न्यारी न्यारी राखै है और जी रा भाव पूरे जोर सूं परगट करै है। इये रट ने चावै आं रो सुभाव समझो चावै प्रकृति री दात पण मिनख री विशेपता आं सगळां सूं न्यारी है। मिनख वुद्धि रै परभाव सूं दूसरां री भाषा अथवा भावां पर रीझ वानै आपरा वणाणै रो सांग भरै है पण जद जी छोळां चढै, कोड में रग रग नाचै,बै मस्ती में मातृभाषा री गोद में ही मोद आवै। जद वडां री वात याद आवै "मांग्यां चीयां किसा चूरमा" अथवा भारी दुख सूं जी में ठेस लागै तो चट मा ही याद आवै, मांगेड़ी धाड़ के ठारै? जद इसी वात है तो दूजा क्यूं जी दोरो करै।

वादळी मरुधर ने प्राणां सूं प्यारी है। वैं रे चाव ने कुण पूगै। रात दिन आंखां में रमै। जैं गे नाम सुण्यां सुख ऊपजै। वाळक पणै सूं जिण में ऊंटां घोड़ां री अनेक कल्पना करी जावै है जिण में इन्द्रधनस और जळेरी जी ललचावै। इसी प्यारी चीजरा गुण दूसरी भाषा में गाऊँ आ सोचण री विरियां कै ने? झट मुंह सूं 'वरसे भोळी वादळी आयो आज असाढ' निकळतां ही 'रम रम धोरां आव' री रट लागै। जठै जी खोल मिलणो हुवै दूजो वीच विचाव किसो? आपरी भाषा और आपरै भावां पर भरोसो चाहिजै।

बीकानेर
ऋपि पंचमी
वि० सं० १९९८

चन्द्रसिंह

समर्पण

परम विद्यानुरागी

मातृ भाषा रा महान प्रेमी

बीकानेर राज रा युवराज

कर्नल महाराज कुमार श्रीसादूलसिंह जी बहादुर

रै कर-कमलां में

सादर और सविनय समर्पित

आप मातृभाषा और मातृभाषा रै साहित्य रा घणा प्रेमी हो आप रै ही एक प्रजाजन राजस्थान रै सब सूं प्यारे विषय 'बादळी' ने ले 'र मातृभाषा में आ छोटी सी रचना करी है, घणै आदर और विनयपूर्वक आपरी सेवा में समर्पित है. वै नै आप स्वीकार कर' र सेवक नै कृतार्थ करसो इसी आशा है.

विनीत

लेखक

प्रकाशक रो वक्तव्य

आ परम हर्ष री बात है के 'बादळी' रो पहलो संस्करण एक बरस रै मांय हाथूं हाथ और बड़ै चाव सूं निकळ ग्यो। दो बरस हुया मांग पर मांग आती रई। पण कागदां री मूंगाई और बीं पर भी कठिणता सूं मिलणो इस्यो वेढब कारण बण रयो हो के आज ताईं ईं नै छपार पढणै री इच्छा राखण हाळां री मनस्या पूरी नी कर सक्या, ईं रो पूरो खेद रयो।

अब भी कागदां रो बिसोई अभाव है और मूंगाई तो बीसूं भी घणी है पण गाहकां री मांग नै घणां दिनां ताईं रोकण री हीमत कोनी हुई, ईं वास्तै ओ दूजो संस्करण, सस्तै संस्करण रै रूप में निकाळणो पड़ रयो है। हिन्दी अनुवाद और विषय सूची अनावश्यक समझ र निकाळ दी है और किताब रो साइज भी छोटो कर देणो पड्यो है।

चांद जळेरी बीकानेर
थापना,
वि० सं० २००४

अध्यक्ष
साहित्य प्रकाशन विभाग

वादली

वादळी

जीवण नै सह तरसिया
वंजड़ झंखड़ वाढ
वरसे, भोळी वादळी,
आयो आज असाढ

बादळी

१

आंठूं पोर अडीकतां
बीतै दिन ज्यूं मास
दरसण दे अब, बादळी,
मत मुरधर नै तास

२

आस लगायां मुरधरा
देख रही दिन-रात
भागी आ तू, बादळी,
आयी रुत बरसात

३

कोरां-कोरां धोरियां
डूंगां-डूंगां डैर
आव रमा, अे वादळी,
ले-ले मुरधर ल्हैर

४

ग्रीखम-रुत दाभी धरा
कळप रही दिन-रात
मेह मिलावण वादळी,
वरस वरस वरसात

५

नहीं नदी-नाळा अठै
नहिं सरवर सरसाय
अेक आसरो वादळी
मरु सूकी मत जाय

वादळी

१

आंठूं पोर अडीकतां
बीतै दिन ज्यूं मास
दरसण दे अब, बादली,
मत मुरधर नै तास

२

आस लगायां मुरधरा
देख रही दिन-रात
भागी आ तू, बादळी,
आयी रुत बरसात

३

कोरां-कोरां धोरियां
डूंगां-डूंगां डैर
आव रमा, अे वादळी,
ले-ले मुरधर ल्हैर

४

ग्रीखम-रुत दाझी धरा
कळप रही दिन-रात
मेह मिलावण वादळी,
वरस वरस वरसात

५

नहीं नदी-नाळा अठै
नहिं सरवर सरसाय
अेक आसरो वादळी
मरु सूकी मत जाय

६

खो मत जीवण, बावळी,
डूंगर-खोहां जाय
मिलण पुकारै मुरधरा
रम-रम धोरां आय

७

नांव सुण्यां सुख ऊपजै
जिवड़ै हुळस अपार
रग-रग नाचै कोड में
दै दरसण जिण वार

८

आयी घणी अडीकतां
मुरधर कोड करै
पान फूल सै सूकिया
कांई भेंट धरै ?

९

आयी आज अडीकतां
झड़िया पान र फूल
सूकी डाळयां तिणकला
मुरधर, बार समूळ

१०

आतां देख ढंतावळी
हिवड़ै हुयो हुळास
सिर पर सूकी जांवतां
छूटी जीवण - आस

११

सोनै सूरज ऊगियो
दीठी वादळियां
मुरधर लेवै वारणा
भर-भर आंखड़ियां

१२

सूरज-किरण उंतावळी
मिलण धरा सूं आज
बादळियां रोक्यां खड़ी
कुण जाणै किण काज

१३

सूरज ढकियो बादळ्यां
पड़िया पड़द अनेक
तड़फै किरणां बापड़ी
छिकै न पड़दो एक

१४

सुरज-मुखी सै सूकिया
कंवळ रह्या कमळाय
राख्यो सुगणै सुरज नै
बादळियां बिलमाय

१५

छिनेक सूरज निखरियो
बिखरी वादळियां
चिलकण मुंह अब लागियो
धरा किरण मिळियां

१६

छिन में तावड़ तड़तड़ै
छिन में ठंडी छांह
वादळियां भागी फिरै
घात पवन गळ बांह

१७

रंग-बिरंगी वादळी
कर-कर मन में चाव
सूरज रै मन, भांवतो
चटपट करै वणाव

१८

पहरै वदळै वादळी
वदळ पहर वदळाय
सूरज साजन नै सखी
आसी कुण सो दाय

१६

सूरज साजन आवसी
वैठी पेई खोल
वदळ वदळ धण वादळ्यां
पैरै वेस अमोल

२०

चुप मत साधे, वादळी,
कह दे सागण वात
मैं लखली तेरी कळा
सैण सिखायी घात

२१

सिर पर घूमै सांकड़ी
कर-कर नवलो वेस
सोक सिखाई, वादळी,
इण में लाघ न लेस

२२

छोड़ मरोड़, छिपा मती
धण रो देख हवाल
वता वता अे वादळी
साजन रा सै हाल

२३

सज धज आवै सामनै
चालै मधरी चाल
सैण-सनेसो, वादळी
सुणा-सुणा ततकाल

२४

धोळी रूई पैल सी
घुळ घुळ भूरी होय
बरस घटा वण, बादळी,
मुरधर कानी जोय

२५

जळहर ऊंचा आविया
बोल. रह्या जळ-काग
देण वधाई मेह री
रह्या कनैया भाग

२६

थायी नेड़ी मिलण नै
नीतरपंखी रेख
हरखी सारी मुरधरा
चांद-जळै री देख

वादळी

३०

गांव गांव में, वादळी,
सुणा सनेसो गाज
इंदर वूठण आवियो,
तूठण मुरधर आज

३१

उठती दीसी वादळी
मरू रह्या जे आज
घर कानी जी चालियो
सुण-सुण मधरी गाज

३२

घूम घटा चट ऊमटी
छायी मुरधर आय
मरू गयां नैं मोड़िया
मधरी गाज सुणाय

३३

ऊगत नाख्या माझ्ळा
छिपतां नाखी मोग
सूरज तकड़ो तापियो
कर विरखा-संजोग

३४

ऊंडी अंबर में उठी
गह डंवर घहराय
वरस सुहाणी वण, घटा,
सारी धर सरसाय

३५

घटाटोप आभो घिर्यो
रह्यो खूब धरराय
आखी जीया-जूण रो
हियो हिलोळा खाय

३६

काळी-काळी काठ्ळी
उजळी कोरण जोय
उत्तर दिस में उट्ठियो
जाण हिंवाळो होय

३७

अंबर में उमड़ी घटा
आभै अटकी आंख
चढ-चढ छातां छोळ में
मोर संवारै पांख

३८

जोड कांगसी जोर सूं
कुण्डाळो करियां
बाळक मांगै, बादळी
भर दे तालरियां

३९

मीठा बोलै मोरिया
डूंगां टोकां गाज
पळ-पळ साजन संभरै
इसड़ी वेळा आज

४०

मीठा बोलै मोरिया
डूंगां टोकां गाज
साजन आज न सांकड़ै
जीव भुळै किण साज

४१

आज कळायण ऊमटी
छोडै खूब हळूस
सो-सो कोसां बरससी
करसी काळ विधूंस

बादळी

४२

दिन में रात जगावती
बादळियां बरसात
कदे अमावस सी करै
चट पूनम री रात

४३

पी-पिहु बोल पपीहड़ां
टी-टिहु टीटोड्यांह
पिहू-पिहू रव मोरियां
हालै हूक जड्यांह

४४

ज्यूं-ज्यूं भवरो गाजियो
मनड़ो हुयो अधीर
बीजळ पळको मारतां
चाली हिवड़ै चीर

४५

ऊंडा टोक उळांडिया
चूंखै में चमकी
जाण वूझतां, वीजळी,
जोड़ी भल हूंढी

४६

खिण दक्खण खिण उतर दिस
खिण चोगरदी चट्ट
कुण जाणै किण खोज में
वीज झपाझप झट्ट

४७

पळ-पळ में पळका करै
आभै भरयो उजास
जाणै प्रीतम-खोज में
छाणै वीज अकास

४८

भूरी काळी वादळी
वीजळ रेख खिंचाय
जाण कसोटी ऊपरां
सुव़रण-रेख सुहाय

४९

जळ सो प्यारो जीव़ है
कण सी कोमळ काय
कुण से कूणै, वादळी,
राखी वीज छिपाय

५०

सदा संजोगण मोद़ मैं
रह़ जळहर लिपटाय
विरहण झूरै बीजळी,
[illegible]

५१

कड़कै वीज कुलच्छणी
गाजै घण गंभीर
वाजै झीणो वायरो
भाजै विरहण-धीर

५२

गाज न समझूं, वादळी,
मत ना पळका मार
बूंदां लिख दे वांच लूं
साजन रा समचार

५३

आभो घररायो अवै
आयो सावण मास
पूरै मन सूं पूरसी
आ धरा री आस

वादळी

५४

छावण लागी वादळी
हिवड़ै उमड्यो नेह
तरसण लागी तीजणी
फड़कण लागी देह

५५

ऊंचां डाळां मांडिया
हींडा तकड़ी डोर
हींडै ऊभी तीजण्यां
कर-कर पूरो जोर

५६

तकड़ै हींडां तीजण्यां
जावै लाग अकास
वादळियां सामी मिळै
भर-भर हियै हुळास

५७

रळमिळ चाली तीजण्यां
गाती राग मल्हार
भणक पड़ी जद वादळी
वरस पड़ी उण वार

५८

वाजै धीमो वायरो
आभो लोरां-लोर
छिणमण-छिणमण छांटड़ी
हिवड़ै उठै हिलोर

५९

नभ सूं उतरी वादळी
ज्यूं वेरयां पणिहार
साजन सामा आविया
उळझ पड़ी उण वार

६०

वरसण आयी वादळी
नेणां आयो नीर
धण किण विध अब धारसी
देख धरा मन धीर

६१

प्रीतम भेजी वादळी
इण में मीन न मेख
वरसण मिस झूरै खड़ी
धण विळळन्ती देख

६२

भेटचा डूंगर खरदरा
खरो हुयो सुभाव
भाजै गाजै गड़ गड़ै
तेज दिखावै ताव

६३

पड़ड़-पड़ड़ बूंदां पड़ै
गड़ड़-गड़ड़ घण गाज
कड़ड़-कड़ड़ बीजळ करै
धड़ड़-धड़ड़ धर आज

६४

परनाळां पाणी पड़ै
नाळा चळवळिया
पोखर आस पुरावणा
खाळा खळखळिया

६५

टप-टप चूवै आसरा
टप-टप विरही नैण
झप-झप पळका बीज रा
झप-झप हिवड़ो सैण

६६

छातां पर पाणी पड़्यो
परनाळां न समाय
वळ खाता वाळा वगै
खाळां जोड़ां मांय

६७

चोवै कच्चा आसरा
पड़वै कीच अपार
ले माटी नर पूगिया
छातां पर उण वार

६८

डांडयां पाणी सूं भरी
रुकिया सारा राह
पंथी एक न नीसरै
घण वरसंतै मांह

६९

चालै पवन अटावरी
घिर-घिर वादळ आय
फुर फटकारा फांफ रा
जळ ही जळ कर जाय

७०

आय फांफ उतराधरी
वूठयो तकड़ो मेह
छातां तालां डैरियां
जळ ही जळ दीसेह

७१

सूंई धारां ओसरयो
दूधां-वरण अकास
रात-दिवस लागै झड़ी
सुरंगै सावण मास

७२

फांफां लाग्यां फाटिया
भींतां लेव तमाम
जाणै मन सूं मांडिया
चीतारै चित्राम

७३

घिरघिर घूमैं वादळी
फुरफुर चालै वाय
हिवड़े लागै गिलगिली
ठोड़ न ठहरयो जाय

७४

वरसै भूरी वादळी
दीसै थोड़ी दूर
आवै हळका लैरका
लद-लद सौरभ-पूर

७५

सौरभ आवै सौगणी
मिळियो धर सूं मेह
हूंगै सांसां जग पियै
हिवड़ै भीतर नेह

७६

सावण सांझ सुहावणी
बाजै झीणी बाळ
गावै मूमल गोरड्यां
खावै हियो उछाळ

७७

बोलै हरिया सूवटा
उड-उड बिरछां डाळ
डरर-डरर रव डेडरां
पोखरियां री पाळ

८४

आभै तणियौ धनख लख
टाबर आपोआप
'ओ मामै रो डांगड़ो'—
लाग्या करण धिणाप

८५

किरसाणां हळ सांभिया
चित में आयो चेत
हरख भरया सै पूगिया
अपणै-अपणै खेत

८६

बीजां अंकुर फूटिया
अळसाया सरसाय
हरिया-भरिया फूलड़ा
फूल्या-फळिया जाय

८७

धण जाणै डूंगर खड़्या
सरवर नभ मंझार
उण में धोळा चूंखला
ज्यूं हंसां री डार

८८

भूरा भाखर भीजियां
कळमस काळा स्याह
जाणै हाथी राज रा
छूटया रोही मांह

८९

अंबर झूलै बादळी
धण झूलै झूलांह
वेलां, बिरछां, डाळियां
हिवड़ो हिवड़ै मांह

वादळी

६०

पळ में भूरै भाखरां
पळ में टीवड़ियां
रमतो दीसै रात नै
चांदो वादळियां

६१

च्यारूं कूंटां घेरियो
चांदो वादळियां
जाण गळूंडो मारियां
वैठी वीजळियां

६२

धारी-धारी वादळ्यां
वणै पालकी आय
मुळक चढ़ै इण ऊपरां
चांदो जी इतराय

६३

चूसी किरणां चोज सूं
आभै पड़तां आंज
टुग-टुग जोवै चोथणी
वादळियां रै राज

६४

विनवां थांसूं वादळ्यां
खोलो खांडी कोर
म्हांनै इतरो मोकळो
आंखड़ल्यां रो चोर

६५

चांद छिपायो वादळ्यां
धरा गमायो धीर
सुरंगी साड़ी ऊपरां
ओढयो सांवळ चीर

९६

ऊँची काळी वादळी
चंद्रै चढ ली सांस
सोनो परखण पारखी
धर्‌यो कसोटी हांस

९७

चांद विलूंबी वादळ्यां
कर-कर मन में चाव
मुळकै मिल-मिल मोद में
पळ-पळ नवलो भाव

९८

वादळियां आभो घिरयो
बिच-बिच चांद सुहाय
लुक-मिचणी लाग्यो रमण
मुळक-मुळक मन मांय

६६

आयी घणी अडीकतां
रही दिना दो च्यार
बरसी ठाळां ठाळियां
पाछी पिछवा त्यार

१००

धर जळधारा लेण नै
खड़ी मौन धरियां
पाछी पिछवा वाजतां
पंच-धूणी तपियां

१०१

आली चट सूकी धरा
हरी रही अळसाय
पैल झपट्टै झांझळी
लेगी रंग उडाय

१०२

आहूं पोरां अेकसी
सुं-सूं सुंसातीह
वांडी ज्यूं वटका भरै
खूं-खूं खूंखातीह

१०३

हिरणां झाली आखरी
ताकै कूवा-खेळ
तिस मरता थिगता फिरै
छूट्यो हिरण्यां मेळ

१०४

किरसाणां हळ छोडिया
तीना लाव 'र कोस
कूवां कुंडां घरियां
फूग्या जीव मसोस

वादळी

१०५

वेगी वावड़ वावळी
धान रह्यो अळसाय
पाना मुख पीळीजियो
झुर-झुर नीचा जाय

१०६

गयी, गयी, ना वावड़ी
रहि-रहि ओळूँ आय
कुण जाणै किण देस में
पवन रह्यो परचाय

१०७

पिछवा मुड़को खांवतां
वंधण लागी आस
वाजण लाग्यो सूरियो
भरियो हियै हुळास

वादली

१०८

कठैक वंजड़ वरसगी
कठैक आधै खेत
तरसा मत इण रीत सूं
वदळी, वरस सचेत

१०९

कठैक छाजां खारियां
कठैक छिण मण छांट
कठैक पटक फुंवारियां
वूठो घण जळ वांट

११०

नीलो अंबर नीखरयो
जाणैं समद अपार
कठैक काळा चूंखला
मगरमच्छ उणियार

१११

तकड़ा भरिया तालड़ा
चिलकै किरणां पाय
धोरा धुप राता हुया
न्हाय हरी वणराय

११२

भूरा - भूरा धोरियां
भरिया मामोल्यां
चरच्यो धरा लिलाड़ ज्यूं
कूं - कूं री टीक्यां

११३

बूंदी लाल ममोलिया
हरियो आंगण खोड
ओढी धरती चूनड़ी
तीजणियां री होड

११४

वीजळियां जळहर मिळै
आभो धर मिळ अेक
वेलड़ियां विरछां मिळै
प्रीतम राखे टेक

११५

वूठी जोरां वादळी
टूट्या टीवड़िया
नाटा खाडा टैरियां
तालरिया भरिया

११६

हरिया हरिया रूंखड़ा
लागी लूंबण वेल
हळवो झोलो पवन रो
आय विगाड़ै मेल

११७

खरसंडिया खैरूँ करै
गोर दड़ूकै सांड
नारा गोधा वाछड़ा
मच - मच होवै टांड

११८

वांडी काळा गोहिरा
सरळक अर संखचूड़
परवा में गैळीजिया
लिट - लिट ठंढी धूड़

११९

टोळो सांझो राइकां
गायां लार गुवाळ
बाळक दाबड़ियां लियां
लाग्या कारण रुखाळ

१२०

कंचन - नगरी सी बणी
बादळियां सूँ आज
झिलमिल-झिलमिल कांगरा
सूरज - स्वागत काज

१२१

जळ सूं थोड़ी ऊपरां
काळी बादळ रेख
भींत बणाई मँगियां
सुपनो सागर देख

१२२

बादळ फाटण लागिया
चौवै छम चौफेर
इंद्र - धनख जिम भेळगो
धरा धनख नग घेर

१२३

वण - ठण आयी वादळी
राची धर रंग - राग
चेतन अत चंचळ हुयो
जड़ जग उठियो जाग

१२४

मोठ कठोरां जोड़ में
मांची माची वेल
फूलां भार लदी पड़ी
विच - विच चींया मेल

१२५

छींकै टीबी पर खड्या
अड़वै कानी जोय
पान खड़क्क्यां छींकला
ऊपर छाळां होय

१२६

आज सिधावो तो सिधो
दीज्यो मती विसार
तिसवारी जद आवसी
लीज्यो उण वार

१२७

गोळा छूट्या गोफियां
गुपिया बादळियां
ओळां मिस उळटाइया
फुर - फुर फांफड़ियां

१२८

विरखा काठी राखले
मत ना कोसो झाड़
पाकां धानां मत करे
ओळां री वोछाड़

१२६

ओळां डोका टूटसी
झड़सी सागे फाळ
समो लगायो सांतरो
कर मत पाछो काळ

१३०

सिधा सिधा, अे बादळो,
वस सुरगां रै वास
वरसाळै मत भूलजे
तूं ही सुरधर - आस

शब्द-कोष

अ

अकास–आकाश

अटावरी–तेज

अडीकतां–प्रतीक्षा करते हुए

अमूझी–घुट गई

आभ–अभ्र, आकाश

आभै–अभ्र, में, आकाश में

आसरा–मकान, आश्रय

इसड़ी–ऐसी

इंदर–इन्द्र

उमळ–बरस पड़ी

ऊपरछाळां–चौकड़ी साधना

ऊमटी–उमड़ी

ऊंडी–गहरी

ओसरै–बरस पड़ती है

ओळूं–याद, वियोग, जन्य-मधुर स्मृति

अंबर–आकाश

क

कंवळ–कमल

कनैया–वर्षा के आगमन की सूचना देने वाले एक प्रकार के पक्षी।

कळप–कलपना

कळमस–कलमश, काले

कळायण–बरसनेवालीकाली घटा

कमळाय–कुम्हला रहे हैं

कस–थोड़े पानी के हलके बादल

कांगसी–कंघी जोड़ना

काठळी–घटा

किरसाणां–किसानों ने

कुणसे–कौन से

कुलच्छणी–कुलक्षणी

कूणै–कोने में

कूटणी–एक प्रकार का खेल

कोड–चाव

कोरण–कोर

कोस–चमड़े का डोल

कोसो–बादल में के जल का

शेष अंश

कुंडाळो–कुंडली

ख

खररो–तीखा

खरसंडिया–एक प्रकार का बैल

खांडी–खंडित

खिण–क्षण

खितिज–क्षितिज

खैरू करै–मस्ती करते हैं (सींगों से लेकर धूल को ऊपर उछालते हैं)

खोड़–जंगल

ग

गळूण्डो–गोलाकार

गहडंबर–गहरे छाये बादल

गिलगिलो–गुदगुदी

गीगा–बच्चे

गुपिया–पकड़ लिये

गैत्तीजिया–विष के नशे में उन्मत्त हो गये

गोफिया–गोफना

गोधा–बैल

गोर–गायों की गोठ

घ

घण–घन, बादल, बहुत

च

चळवळिया–तेजी से बहने लगे

चित्राम–चित्र, तस्वीर

चीतारै–चित्रकार (ने)

चींया–कच्चे फल

चूखला–बादल के छोटे सफेद टुकड़े

चोगरदी–चारों ओर

चोज–खुशी, प्रसन्नता

चोवै–टपकते हैं

छ

छांजां खारियां–बहुत जोर से

छाणै–छानती हैं

छावण लागी–छाने लगी

छींकला–आशंका जनित 'छिं छिं' शब्द करते हुए मृग
छींकै – हरिण का शंका सूचक शब्द
छोळ–लहर

ज

जळहर–जलधर, बादल
जळेरी–जलहरी
जिवड़ो–जीव
जीवणा–जीवन, जीना, जल

झ

झट्ट–शीघ्र
झपाझप–बारंबार चमकना
झीणी–धीमी, हलकी
झूरै–रोती है
झोला–फटकार

ट

टांड–हृष्ट पुष्ट, स्थूलकाय
टाबर–बालक
टीबां–टीलों पर
टुग टुग–टकटकी लगाये
टोळ–झुंड, समूह, टोली,
टोळो–जंगल में फिरने वाले ऊँटों का समूह

ठ

ठोड़–स्थान

ड

डांडयां–पगडंडियाँ
डैर–चारों ओर टीलों से घिरी हुई नीची उपजाऊ भूमि
डोर–रस्सी

त

तकड़ी–जोर का, दृढ़
तड़तड़ै-प्रचंड होता है
तड़फै–तड़प रही है
तरसिया–तरस उठे
ताव–तेजी, गर्मी, क्रोध
तावड़–धूप
तास–त्रास, दुःख देना
तिरियां मिरियां–ऊपर तक भरे हुए

तिसळै–फिसलना
तिसवारी–प्यास
तीजणीं–तीज (त्योहार विशेष) का व्रत करने वाली स्त्री
तीतर पंखी–तीतर के पंखों के समान रंग वाली
तूठणा–तुष्ट होना

द

दक्खण–दक्षिण दिशा
दाझी–झुलसी हुई
दाय–पसंद
दीठी–देखी
दीसी–दिखाई दी
दूधै वरण–दुग्ध वर्ण

ध

धण–स्त्री
धणख–इन्द्रधनुप के रंग की चुन्दरी
धनस–इन्द्रधनुप
धिणाप–स्वत्व जताना
धीवड़ियां–बेटियां

न

नाडा–छोटे तालाब
नारा–नाथ वाले बैल

प

पड़द–परदे
पळको–चिलका
पळपळ–पलपल में
परचाय–बिलमाना, बहलाना
पिछवा–वायव्य कोन की हवा
पुरावणा–पूर्ण करनेवाले
पूगिया–पहुँचे
पूनम–पूर्णिमा
पेई–पेटी, सन्दूकची
पोखर–पोखरा, तालाब

फ

फांफ–झंझावात
फैल–पहल

ब

बरसा–वर्षाळै ऋतु में
बाछड़ा–बछड़े
बाढ–खेत

वाळ–पवन
वायरो–हवा का हलका झोंका
वावड़ना–वापिस लौटना
विलमाय–बहलाकर
विळळन्ती–विलाप करती
विधूंस–नाश
वीज–बिजली
वीजळ–बिजली
वूठण–बरसने
वूंदां–बूंदों में
वेरयां–कच्चे कूए
वेळका–वालुका रेत
वेळा–वेला, समय
वेस–कपड़े

भ

भाखर–सूखी पहाड़ी

म

मऊ–दुर्भिक्ष में परदेश को जाना
मधरी–मधुर, मत्त
मरोड़–अकड़
माछळा–प्रभात कालीन सूर्य की किरणों से उत्पन्न गगन में दूर तक फैली हुई लालिमा की लंबी धाराएँ
ममोलिया–इन्द्रवधू
मीन मेख–संदेह, ननुनच
मुड़को–वापिस फिरना
मोग–सांध्य रवि – कर से उत्पन्न लालिमा की धाराएँ
मंझार–बीच, मध्य

र

रुढ रुढ–लुढ़क लुढ़क कर
रेख–रेखा

ल

लखली–जानली
लाव–पानी निकालने की चमड़े की बड़ी रस्सी
लाव न लेस – तनिक भी संबन्ध नहीं
लिलाड़–ललाट

लूंबणा–लिपट कर लटकना
लेव–भीत आदि पर लगाया हुआ गारे का लेप
लोरां लोर–एक के बाद दूसरे लोर का आना

व

वाय–पवन, वायु
वारणा–बलैयां

स

संजोगण–संयोगिनी
सनेसो–संदेश
सागण–वही, असली
सांकड़ी–समीप
साधै–करना
सांमै–सामने
सुगणौ–उत्तम गुण वाले को (पति का सम्बोधन)
सूरियो–उत्तर दिशाका वायु
सैण–पति, प्यारा
संभरै–याद आता है

ह

हळस–घटा के आगे चलने वाले हलके बादल
हिलोळा–हिलोरें, लहरें
हींडा–झूले
हींडै–झूलती हैं
हुळस–उल्लास, आनंद
हुळास–उल्लास

—बादली पर—

* विद्वानों की सम्मतियाँ *

"बादळी" कवि चन्द्रसिंह की एक उत्कृष्ट रचना है। राजस्थानी काव्य में प्रकृति का चित्र इसमें बड़े ही सुन्दर ढङ्ग से खींचा गया है। वर्तमान बीकानेर नरेश को आपके युवराज काल में ही यह किताब समर्पित की गई थी। इसको देखकर आपने बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कवि को पुरस्कृत किया और इसके प्रथम संस्करण के उत्तम मुद्रण का व्यय भी प्रदान किया।

काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने सम्वत् २००० वि० में इसे भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं की सर्वोत्तम रचना निर्धारित कर "रत्नाकर पुरस्कार" तथा "बलदेवदास पदक" से विभूषित कर अपनी सराहना का परिचय दिया था।

इस किताब को जिसने भी देखा, मुक्त कण्ठ से सराहना किए बिना न रहा। जिन महापुरुषों एवं विद्वानों ने लिखित रूप में अपनी सम्मतियां प्रदान की हैं उनमें से थोड़ी सी पाठकों के परिचयार्थ नीचे उद्धृत की जाती हैं:—

प्राच्य-कला निकेतन के प्रथम प्रकाशन 'बादळी' को मैंने देखा। अपने ढङ्ग का यह पहला ग्रन्थ है। हिन्दी-प्रेमियों को मारवाड़ी काव्य के आधुनिक रूप से परिचय प्राप्त कराने में यह अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

—डॉ० श्री धीरेन्द्र वर्मा.

सचमुच प्रतिभा किसी देश विशेष की सम्पत्ति नहीं। सजला, सफला, मलयज-शीतला भूमि में कवि उत्पन्न हो सकते हैं तो निर्जला, निष्फला, रेणु-राशि संकुला धरती में भी चन्द्रसिंहजी सदृश सहृदय कवि उत्पन्न हो सकते हैं, जिनके लिए राजिये का यह प्रसिद्ध दोहा सहसा मुंह से निकल पड़ता है:—

जायो तू जिण देश, जळ ऊँडां थोथा थळां।
भंवर पणा रो भेष, रल्यो कठा सूं राजिया॥

श्री खेतसिंह नारायणसिंहजी मिश्रण.

आ बादळी काव्य दुहा मां बनावेल छे। काव्य घणु सुन्दर, हृदय ग्राही, राजस्थानी साहित्य मां रत्न समु अने राजस्थानी नर-नारिओं ना भाव ने व्यक्त करतुं सुन्दर रचना वालु छे, काव्य नी पांछळ अनुक्रमणिका, कठण

शब्दों नो कोष वगेरे आपी ने वाचकों ने सरलता करी छे, आवुं एक धांरू सुरुचिकर बनाववा माटे तेना कर्त्ता ने अमारा अभिनन्दन छे.

"क्षत्रिय-मित्र" भावनगर काठियावाड़.

मैंने श्रीचन्द्रसिंहजी का राजस्थानी पद्यबद्ध 'बादळी' का पद्यात्मक अनुवाद देखा। कवि ने स्वयं कविता पाठ करके समझाया—मारवाड़ में बादल का कितना महत्त्व है। रचना मधुर हृदयग्राहिणी है, शब्दबन्ध से मालूम हो जाता है। राजस्थान के इतिहास का हमारे साहित्य में बड़ा गौरव है। हम बादशाह अकबर के दरबार के कवि पृथ्वी-राज की महाराणा प्रताप को लिखी कविता का बारम्बार पाठ करते हैं। एतदनुसार हमें विश्वास है, इस सुन्दर काव्यमयी पुस्तिका का हिन्दी प्रेमियों में प्रचार होगा, इस तरह वे मरुवासी वीर बन्धुओं के सहृदय मित्र प्रमाणित होंगे।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला.

'लू' राजस्थानी की विख्यात रचना 'बादळी' के रचयिता श्री कुँ० चन्द्रसिंह की यह दूसरी ऋतुकाल रचना है जो भाषा विज्ञान के विश्व विश्रुत भारतीय विद्वान डाक्टर श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या की मरुभाषा में लिखित भूमिका तथा विश्व भारती शांति निकेतन के अध्यक्ष आचार्य श्री नन्दलाल बोस की मनमोहिनी तूलिका की नूतनतम कला कृति से विभूषित एवम् मरुभाषा साहित्य के सुप्रसिद्ध हिमायती हिन्दू विश्व विद्यालय के प्राण, स्वर्गीय महामना मालवीयजी के आशीर्वाद से कृतकृत्य है।

...ी' वाक्य मिला।
...के अनुप्रागन ने

...वशरण अग्रवाल

...ओर से प्रकाशित
मैंने देखा। अनेक
...जीवता देखने को
कौतुहलमयी है।
...हित्य की श्रीवृद्धि

—रामकुमार वर्मा.

कवि की अन्य रचनाएं—
कद मुकरणी,
बाळसाद,
डांफर, चाड़
और रघुवंश इत्यादि

—चांदजळेरी, बीकानेर

शब्दों नो कोष वगेरे आपी ने वाचकों ने सरलता करी छे, आवुं एक धांरू सुरुचिकर बनावना माटे तेना कर्त्ता ने अमारा अभिनन्दन छे.

"क्षत्रिय-मित्र" भावनगर काठियावाड़.

मैंने श्रीचन्द्रसिंहजी का राजस्थानी पद्यबद्ध 'बादळी' का पद्यात्मक अनुवाद देखा। कवि ने स्वयं कविता पाठ करके समझाया—मारवाड़ में बादल का कितना महत्व है। रचना मधुर हृदयग्राहिणी है, शब्दबन्ध से मालूम हो जाता है। राजस्थान के इतिहास का हमारे साहित्य में बड़ा गौरव है। हम बादशाह अकबर के दरबार के कवि पृथ्वीराज की महाराणा प्रताप को लिखी कविता का बारम्बार पाठ करते हैं। एतदनुसार हमें विश्वास है, इस सुन्दर काव्यमयी पुस्तिका का हिन्दी प्रेमियों में प्रचार होगा, इस तरह वे मरुवासी वीर बन्धुओं के सहृदय मित्र प्रमाणित होंगे।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला.

श्री चन्द्रसिंहजी द्वारा रचित 'वादळी' काव्य मिला। धन्यवाद! मेघदूत के चिरन्तर भावों के अनुप्राणन से कवि ने एक सरस वस्तु प्रदान की है।

—वासुदेवशरण अग्रवाल.

प्राच्य-कला निकेतन, विक्रमपुर की ओर से प्रकाशित श्री चन्द्रसिंहजी का "वादळी' काव्य मैंने देखा। अनेक स्थलों पर मुझे स्वभाविकता और सजीवता देखने को मिली। कवि की कल्पना स्पष्ट और कौतुहलमयी है। आशा है, श्री चन्द्रसिंहजी भविष्य में साहित्य की श्री-वृद्धि में अधिक सहायक होंगे।

—रामकुमार वर्मा.